पावन बनाने आते। वह लिबरेटर भी है। सभी का दुःखहर्ता सुखकर्ता है। अभी सभी रावणराज्य में है ना। बाप को आकर छुड़ाना पड़ता है। अब बाप कहते हैं तुम पवित्र बनो। यह पतित दुनिया खत्म होनी है। जो श्रीमत पर चलेंगे वही श्रेष्ठ देवता बनेंगे। विनाश तो होगा। सभी खत्म हो जावेंगे। बाकी कौन बचेंगे। जो श्रीमत पर पवित्र रहते हैं वही बाप की मत पर चल विश्व की बादशाही का वर्सा पाते हैं। इन ल0ना0 का राज्य था ना। अभी तो रावणराज्य है। जो खत्म होना है। सतयुगी रामराज्य स्थापन होना है। राम वह सीता वाला नहीं। शास्त्रों में तो बहुत ही फाल्तू बकवाद लिख दी है। लंका यह सारी दुनिया है। उसमें रावणराज्य है। भारत सोने की चिड़ियाँ थी सतयुग में। जबकि दूसरा कोई राज्य ही नहीं था। बाप आकर भारत को फिर सोने की चिड़ियाँ स्वर्ग बनाते हैं। बाकी जो इतने धर्म सभी हैं वह खत्म हो जावेंगे। समुद्र भी उछल मारेगा। बम्बई क्या था। एक छोटा गाँव था। अभी सतयुग की स्थापना होती है फिर यह बम्बई आदि खत्म हो जावेंगे। सतयुग में बहुत थोड़े मनुष्य होते हैं। कैपीटल दिल्ली ही रहती है। जहाँ ल0ना0 का राज्य होता है। दिल्ली अब कब्रस्तान है, सतयुग में परिस्तान थी। दिल्ली ही गद्दी थी। रावणराज्य में भी दिल्ली कैपीटल है, रामराज्य में भी दिल्ली कैपीटल रहती है। परन्तु रामराज्य में तो हीरे जवाहरों के महल थे। अथाह सुख था। अभी बाप कहते हैं तुमने विश्व का राज्य गँवाया है मैं फिर तुमको देता हूँ। तुम मेरी मत पर चलो। श्रेष्ठ बनना है तो सिर्फ मुझे याद करो और कोई देहधारी को याद न करो। अपन को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। तुम मेरे पास चले आयेंगे। मेरे गले का माला बन फिर विष्णु की माला बन जावेंगे। माला में ऊपर मैं हूँ मैं। फिर दो युगल हैं। ब्रह्मा सरस्वती। वही सतयुग के महाराजा महारानी बनते हैं। उन्हों की फिर सारी माला है जो नम्बरवार गद्दी पर बैठते हैं। मैं इस भारत को इन ब्रह्मा/सरस्वती दुवारा और ब्राह्मणों दुवारा भारत को स्वर्ग बनाता हूँ। जो मेहनत करते हैं उन्हों की फिर यादगार बनती है। वही रुद्रमाला और विष्णु की माला रुद्रमाला है आत्माओं की माला। और विष्णु की माला है मनुष्यों की। आत्माओं के रहने का स्थान वह निराकार परमधाम है। जिसको ब्रह्माण्ड भी कहते हैं। आत्मा कोई अण्डे मिसल नहीं है। आत्मा तो बिन्दी मिसल है। हम सभी आत्मायें वहाँ स्वीटहोम में रहने वाले हैं। बाप के साथ हम आत्मायें रहती हैं। वह है मुक्तिधाम शान्तिधाम। मनुष्य सभी चाहते हैं मुक्तिधाम जावें। परन्तु वापस कोई एक भी जा नहीं सकते। सभी को पार्ट में आना ही है। तब तक बाप तुमको तैयार करते रहते हैं। तुम तैयार हो जावेंगे तब तो फिर वहाँ जो भी आत्मायें हैं वह सभी आ जावेंगे फिर खलास। तुम जाकर नई दुनिया में राज्य करेंगे। फिर नम्बरवार चक्र चलेगा। गीत में सुना ना आखिर वो दिन आया आज.... भक्तिमार्ग में धक्के खाते रहते थे। भक्तिमार्ग है ही भगवान को ढूढ़ने का मार्ग। अँधियारे वन में ठोकरें ही खाते रहते हैं। बाप है ज्ञान सूर्य। ज्ञान सूर्य प्रगटा.. अभी तुम्हारी बुधि में सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान है। जानते हो जो भारतवासी अभी नर्कवासी है वह फिर स्वर्गवासी बनेंगे। बाकी इतने सभी आत्मायें शान्तिधाम चली जावेंगी। समझाना बहुत थोड़ा है अलफ बाबा बे बादशाही। अलफ को बादशाही मिल जाती है तो फिर बधाई कैसे हो जाती है। उसकी कहानी बाप बैठ समझाते हैं। यह है सच्ची सत्यना0 की कथा। बाकी तो सभी हैं दन्तकथायें। बाप ही सत्य नर से ना0 बनाने लिये तुमको यह ज्ञान सुनाते हैं। हिस्ट्री जागरफी है ना। ल0ना0 का राज्य कब शुरू हुआ कितना समय चला तो क्या भी हुई ना। जो विश्व पर राज्य करते थे वही 84 जन्म ले पूरे बिल्कुल ही कंगाल तमोप्रधान बन गये हैं। अभी बाप कहते हैं मैं वही राज्य फिर से स्थापन करता हूँ। तुम 84 जन्म भोग अब पतित बन गये हो। पतित बनाया रावण ने। फिर पावन कौन बनाते हैं? भगवान जिसको पतित-पावन कहते हैं। तुम कैसे पतित से पावन, पावन से पतित बनते हैं वह सारी हिस्ट्री जागरफी सुनाई है। पहले2 सूर्यवंशी चन्द्रवंशी ल0ना0 का राज्य था। फिर चन्द्रवंशी राज्य हुआ। फिर विष्णुवंशी से शुद्रवंशी हुये। उनके बीच दूसरे भी इस्लामी बौधी क्रिश्चन आते। फिर वह जो देवताधर्म जो था सो गुम हो गया। फिर कई की हिस्ट्री जागरफी रिपीट होगी। यह विनाश है ही इसके लिये। कहते हैं ब्रह्मा की आयु शास्त्रों में 100 वर्ष है। यह जो ब्रह्मा है जिसमें बाप बैठ वर्सा दिलाते हैं इन